10

क्या आज यीशु को जानना सम्भव है?

साक्षात्कार के दौरान कई बार पूछा जाता है, ''आप इतिहास में किस व्यक्ति से मिलना सबसे अधिक पसन्द करेंगे?'' आम जवाब होता है ''यीशु नासरी से।'' यीशु केबारेमें बाइबल और इतिहास की किताबें इतनी शानदार बातें बताती हैं, इस कारण हम में से अधिकतर लोग उससे मिलना पसन्द करेंगे।

किसी के *बारे में जानना* उस व्यक्ति को वास्तव में जानने *से बहुत अलग है*। इतिहास का अध्ययन करके हम अतीत में हुए लोगों के बारे में जान सकते हैं, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उन्हें जानते हैं। यह अध्ययन इसी पर केन्द्रित है कि हम यीशु के *बारे में* क्या जान सकते हैं। हमने इसके बारे में ऐसे ऐतिहासिक प्रश्न पूछे हैं जो इतिहास के किसी भी अन्य व्यक्ति के विषय में पूछ सकते हैं: उसके बारे में बताने वाले स्रोत क्या हैं; वह कब, कहां और कैसे रहा; वह कौन यी भाषा(एं) बोलता था; वह अपने बारे में क्या सोचता था; उसका क्या विश्वास था; और वह कैसे मरा। यीशु का अध्ययन करते हुए हमें यह भी पूछना आवश्यक है कि क्या सम्भव है कि वह वास्तव में मुर्दों में से जी उठा।

अब हम उस प्रश्न पर आते हैं, जो नये नियम के लेखक (यीशु के बारे में हमारी जानकारी के स्रोत) हमसे पूछने का आग्रह करते हैं कि क्या आज यीशु को जानना सम्भव है? यह पूरी तरह से ऐतिहासिक प्रश्न नहीं है, यह सवाल यीशु के इतिहास द्वारा हमें बताने के कारण है, विशेषकर यह तथ्य कि वह मुर्दों में से जी उठा और अब भी स्वर्ग में जीवित है। यदि इसमें ज़रा भी सच है तो हम उस के ''बारे में'' ही नहीं बल्कि उसे भी जान सकते हैं। यह थियोलॉजी और निजी विश्वास के क्षेत्र में यानी उन बातों में ले आता है, जिन्हें ऐतिहासिक अध्ययन के सामान्य माध्यमों से दिखाया नहीं जा सकता। यदि वह सब जो यीशु के बारे में हमने जाना है, मान्य है तो यह प्रश्न हमें पूछना आवश्यक है। जो स्रोत हमें यीशु के बारे में बताते हैं वही सुझाव देते हैं कि हम उसे जान सकते हैं। इसके अलावा पूछे जाने के योग्य केवल ऐतिहासिक प्रश्न ही नही हैं, या हैं?

यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखता है कि क्रूस पर चढ़ाए जाने से थोड़ा पहले यीशु ने अपने पिता से प्रार्थना की:

> हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे। क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे। और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें (यूहन्ना 17:1ख-3)।

यीशु के अपने शब्दों में उसे जानना और परमेश्वर को भी जानना सम्भव है। ''अनन्त जीवन'' यही तो है कि परमेश्वर को उसके पुत्र यीशु में ''देख'' कर जानें कि वास्तव में परमेश्वर

कौन है (यूहन्ना 1:14-18)। वह केवल उनकी ही बात नहीं कर रहा था, जो उसके समकालीन थे, क्योंकि बाद में की गई इस प्रार्थना में उसने उनके लिए विनती की जिन्होंने उसके चेलों के द्वारा वचन सुनकर उस पर विश्वास लाना था (देखें 17:20)।

वह आज भी हमारे साथ है

यूहन्ना नये नियम का अकेला लेखक नहीं है जिसने सुझाव दिया कि हम आज यीशु को जान सकते हैं। सुसमाचार के अपने वृत्तांत के आरम्भ में लूका ने अपने संरक्षक थियुफिलुस को बताया कि उसे अच्छा लगा कि ''उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं। कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं'' (लूका 1:3, 4)। प्रेरितों के काम पुस्तक में लूका ने इसी विचार को जारी रखा: ''हे थियुफिलुस, मैंने पहिली पुस्तक उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरम्भ में किया और करता और सिखाता रहा। उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया'' (प्रेरितों 1:1, 2)। ध्यान दें कि लूका ने उसकी पहली पुस्तक (लूका रचित सुसमाचार) उस सब के बारे में थी जो यीशु ''करने और सिखाने *लगा*।'' जहां तक लूका की बात थी, कहानी अभी पूरी नहीं हुई क्योंकि यीशु अभी पूरा नहीं हुआ था। प्रेरितों के काम पुस्तक उस सब का वर्णन करती है जो यीशु पवित्र आत्मा की उपस्थिति अर्थात स्वर्ग में उसके चले जाने के बाद अपने अनुयायियों के साथ अपनी आत्मिक उपस्थिति के द्वारा करता और सिखाता *रहा* (प्रेरितों 1:6-11)। जैसा कि लूका द्वारा बताया गया, अपने जी उठने के बाद अपने चेलों को बताई गई यीशु की पहली बात पवित्र आत्मा के आने के बारे में जिसकी ''प्रतिज्ञा पिता ने की'' और जो उन पर शीघ्र उतरने वाला था (प्रेरितों 1:4, 5)। प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ने पर हमें पता चलता है कि अपने लोगों के साथ आत्मा की उपस्थिति के द्वारा यीशु क्या करता और सिखाता *रहा*।

यही हुआ, इस कारण यह तर्कसंगत लगता है कि हमारे इस प्रश्न का कि ''क्या आज यीशु को जानना सम्भव है?'' उत्तर देने के लिए प्रेरितों के काम पुस्तक अच्छी जगह है।

के ''बारे में जानना'' से को ''जानना'' तक

पवित्र आत्मा का आना जिसकी प्रतिज्ञा यीशु ने प्रेरितों 1 अध्याय में की थी, अगले अध्याय में वास्तविकता बना। यह घटना ''पिन्तेकुस्त'' का यहूदी पर्व थी (''पचास'' के लिए यूनानी शब्द, क्योंकि यह फसह के पचास दिन बाद मनाया जाता था)। यीशु को फसह के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया, और पचास दिनों बाद पिन्तेकुस्त के पर्व को मनाने के लिए यरूशलेम में आए लोगों की भरमार थी। यीशु के चेले भी वहीं आए थे, जैसा कि उसने उनसे कहा था कि वे वहीं रहें, और अचानक वहां तीन बातें हुईं जो आत्मा के आने का चिह्न था। आरम्भ एक जबर्दस्त आंधी की आवाज के साथ हुआ। फिर, वैसे ही आग जैसा लगने वाला कुछ उनके सिरों के ऊपर दिखाई दिया, और फिर प्रेरितों को वे भाषाएं बोलने की आश्चर्यकर्म के द्वारा योग्यता मिली जिसे उन्हो कभी सीखा नहीं था। (इस संकेत के लिए कि वे वास्तविक भाषाएं जो ''परमेश्वर के सामर्थी कामों'' को बताने के लिए इस्तेमाल की गईं, देखें 2:8, 11.)

स्वाभाविक रूप में उस सब से भीड़ खिंची आई। लोग जानना चाहते थे कि यह सब क्या है। यह बात पिन्तेकुस्त की ''मुख्य घटना'' नहीं थी। क्योंकि उनकी व्याख्या की जानी थी। इससे भी बढ़कर वहां कुछ होने वाला था, और पतरस लोगों को बताने के लिए खड़ा हो गया कि यह क्या है। उसने बताया कि जिस घटना को वे देख रहे थे वह सदियों पहले की गई योएल की भविष्यवाणी थी यानी यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होना था कि केवल नबियों, राजाओं और इस्राएली लोगों के अगुओं बजाय एक दिन वह अपने आत्मा को ''सब मनुष्यों पर उण्डेलेगा'' (2:14-21)। अब वह आत्मा अर्थात मसीह की उपस्थिति सब के लिए उपलब्ध होनी थी। यह समझाने के बाद पतरस तुरन्त यीशु, उसे द्वारा किए गए परमेश्वर के सामर्थ के कार्यों, किस प्रकार उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने लिए दिया गया और किस प्रकार मृत्यु उसकी कहानी का अन्त नहीं थी, संक्षेप में बताने लगा। पतरस ने दावा किया कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिला दिया है, जो एक ऐसा तथ्य था कि उसे भजन संहिता 16:8-11 और 110:1 को उद्धृत करके बताया (2:22-35)। उसके संदेश का चरम इस प्रकार था: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (आयत 36)।

ऐसे संदेश से वे लोग बहुत परेशान होते होंगे, जिन्होंने उस दिन पतरस को सुना, विशेषकर इसलिए कि वह उन्हें यीशु की हत्या के दोषी बता रहा था। इसे अलावा यीशु झूठा मसीह नहीं था जैसा कि उन्हें लगा था, बल्कि वास्तव में वह परमेश्वर का मसीहा और प्रभु था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने तुरन्त पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछा कि ''हम क्या करें?'' (आयत 37)। पतरस का उत्तर सुस्पष्ट था, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (आयत 38)। पतरस ने कहा कि जो लोग मन फिराते और यीशु के नाम में पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हें उन्हें *पवित्र आत्मा दिया जाएगा*। अन्य शब्दों में मसीह की उपस्थिति उनके भी साथ रहेगी। वही मसीह जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था, अब जी उठा है और हमेशा तक उन लोगों साथ रहेगा, जो उसमें विश्वास लाते और उसकी शिक्षाओं को मानते हैं। यह भी ध्यान दें कि उद्धार पाने के उनके प्रश्न पतरस के उत्तर ने उन्हें सीधे तौर पर ऐतिहासिक यीशु के बारे में संदेश साथ जोड़ दिया। यह वही था, जिस पर उन्हें विश्वास करना था और जिसकी बात उन्हें मानना आवश्यक थी। उसे ''जानने'' का उनके लिए यही तरीका था: उसके संदेश और अपने भीतर पवित्र आत्मा की उपस्थिति के द्वारा। बाद में सबसे पहले गैर यहूदियों द्वारा उसी संदेश को ग्रहण करने समय एक बार फिर आत्मा की उपस्थिति ने यही संकेत दिया कि परमेश्वर को ग्राह्य हैं। (सामरियों [आधे-यहूदियों] के लिए यह 8:14-16; 11:15-18 में हुआ जबकि जबकि अन्य जातियों में 10:44-48; 11:15-18 में इस संदेश को ग्रहण किया।)

पवित्र आत्मा को पाना यीशु के बारे में सुसमाचार के संदेश को सुनकर, इसमें विश्वास करके और इसकी बात मानकर, सीधे होता है। प्ररितों 5:32 में इस पर ज़ोर दिया गया है, जहां पतरस और अन्य प्रेरितों को यहूदी अधिकारियों के सामने पेश किया गया और धमकी दी गई कि यीशु विषय में बोलना बंद कर दें। उनका डॉर था, ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है'' (आयत 29); पर फिर उन्होंने कहा, ''हम इन बातों

के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं'' (आयत 32)। आत्मा (यानी यीशु की उपस्थिति) केवल उसके बारे में जानने से नहीं आया, न ही यह किसी प्रकार के भावनात्मक अनुभव से था। यह तो यीशु के विषय में कहे गए गए संदेश को सच मान कर है, जिसकी हम खोज करते आ रहे हैं, और उस आज्ञा को मानने से होता है जो प्रेरितों ने दी कि मन फिराओ और यीशु के नाम में बपतिस्मा लो। इन बातों को कहकर प्रेरित केवल वही कर रहे थे, जो यीशु ने उनसे पहले करने को कहा था!

> तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:19, 20)।

''पौलुस से मिलो''

पहले हमने कहा था कि यीशु के बारे में जानकारी के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोतों में पौलुस एक है, जिसने अपने आपको ''अन्यजातियों के लिए प्रेरित'' कहा (देखें रोमियों 11:13; 1 तीमुथियुस 2:7) क्यों उसका मानना परमेश्वर ने उसे यहूदी धर्म की सीमाओं से बाहर के लोगों में यीशु की कहानी में ले जाने लिए अलग किया था (प्रेरितों 9:15; गलातियों 1:15, 16; 2:9)। प्रेरितों के काम पुस्तक में जब हम पहली बार पौलुस से मिले थे, जब वह प्रेरित पौलुस नहीं था; बल्कि वह नये मसीही विश्वास का हिंसक सताने वाला तरसुस का शाऊल था (उसे अपने मानने अनुसार; गलातियों 1:13)। यहां तक वह यीशु को नहीं जानता था। जब उसके विश्वासियों को सताने के लिए जाते हुए रास्ते में यीशु ने उसे दर्शन दिया तो शाऊल ने पूछा, ''हे प्रभु, तू कौन है?'' उस ने कहा, ''मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है'' (प्रेरितों 9:5)। तीन दिनों के बाद उसे समझ आया कि इस सबका उसके लिए क्या अर्थ है। हनन्याह नामक एक आदमी उसे पास आया और उसने उसे बताया, यह प्रभु यीशु था, जिसने उसे दर्शन दिया था। उसने हनन्याह को उसे ऊपर हाथ रखने को भेज दिया ताकि वह देख सके और पवित्र आत्मा से भर जाए (प्रेरितों 9:17, 18)। बाद में इन यादगारी घटनाओं को याद करते हुए पौलुस (जैसा कि प्रेरितों 13:13 के बाद उसे बारे में जानते हैं) याद करता है कि किस प्रकार हनन्याह ने उसे यह कहते हुए निर्देश दिया था; ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। पौलुस यीशु को इस प्रकार जानने लगा।

पौलुस के लिए यीशु को जानना खत्म नहीं हुआ था। फिलिप्पी के यूनानी नगर में कुरिन्थियों नाम अपने पत्र में उसने संकेत दिया कि यीशु को जानना ऐसा था, जिसे वह पहले से अनुभव कर रहा था पर वह उसे और से और अधिक जानना चाहता था। पौलुस फिलिप्पी के मसीही लोगों को ऐसे लोगों से बचे रहने की चेतावनी दे रहा था, जो उन्हें यह बताने की कोशिश कर रहे थे कि केवल यीशु के पीछे चलना काफी नहीं है। वे मसीह के संदेश में यहूदी व्यवस्था, विशेषकर खतने को मिलाने की कोशिश कर रहे थे। (मसीहियत के आरम्भिक दिनों में यह एक आम समस्या थी, देखें प्रेरितों 15:1-5; गलातियों 5:1-6.) फिलिप्पियों 3:4-6 में यह दिखाने के बाद कि वह किसी भी यहूदी की तरह विशुद्ध यहूदी है, पौलुस ने लिखा:

> परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हें मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। और उस में पाया जाऊं; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है। और मैं उसको और उसके मृत्युञ्ज्य की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानू, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं।
>
> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिए थोड़ा चला जाता हूं, जिस के लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था (फिलिप्पियों 3:7-12)।

पौलुस ने कहा कि वह मसीह को पहले से ही जानता था और मसीह को जानने का इच्छुक था। लगता था कि मसीह को जानने को वह वर्तमान के अनुभव और उस लक्ष्य के रूप में मानता था, जिसे पाने के रूप मानता था, जिसे पाने के वह पीछे लगा हुआ था। पौलुस की इच्छा केवल मसीह के बारे में ज्ञान पाना नहीं (आखिर उसने उसे देखा हुआ था; देखें 1 कुरिन्थियों 9:1), बल्कि *मसीह का* ज्ञान था। उसने संकेत दिया कि अपने प्रभु का इतना अधिक ज्ञान उसके जैसे और अधिक बनने, विशेषकर, उसके शुभ समाचार को फैलाते रहकर यीशु दुखों के सहभागी होकर पाया जा सकता है। आमतौर पर यह महंगा सौदा होता है (देखें फिलिप्पियों 1:12-30)।

चलता रहने वाला सम्बन्ध

जैसा कि हमने पौलुस के उदाहरण में देखा है, यीशु से मिलने का अर्थ एक बार होने वाली घटना नहीं है। यह कुछ ऐसा नहीं है जो हमारे साथ घटता है और फिर हम यूं ही चल देते हैं। हम कैसे चल सकते हैं? कौन चलना चाहेगा? बल्कि यीशु को जानने के प्रभाव जीवन बदलने वाले हैं।

यूहन्ना ने पहली शताब्दी ईस्वी के अन्त के निकट अपना पहला पत्र मसीही लोगों के एक गुट के नाम लिखा, जिनमें बहुत खतरनाक झगड़ा हुआ था। उन्हें अन्य विश्वासियों से बचने की आवश्यकता थी, जो इस बात से इनकार कर रहे थे कि यीशु और मसीह एक ही हैं (वास्तविक विचार की तरह ही)। इसके अलावा कलीसिया को इन विरोधियों ने यीशु द्वारा बताया गया मार्ग भी छोड़ दिया था और अनैतिक जीवन शैली की ओर जा रहे थे। परिणाम यह हुआ कि यूहन्ना ने कहा कि वे यीशु को नहीं जानते।

> जो समाचार हम ने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, यह वह है; कि परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते है; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। यदि हम कहें, कि हममें

> कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं: और हममें सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।
>
> ... जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं (1 यूहन्ना 1:5-2:4)।

पौलुस के साथ-साथ यूहन्ना के अनुसार यीशु को जानने का अर्थ है, ''वैसे ही चलना जैसे वह चलता था'' (ऐसे जियो जैसे वह जिया) और वह अपने अनुयायियों को चलना सिखाता था (1 यूहन्ना 2:6)। इसका अर्थ यह है कि ''यीशु को जानना'' केवल उसके बारे में कुछ भावनाएं रखना या कुछ रहस्यमय ज्ञान होना नहीं, बल्कि यह तो उसकी उपस्थिति में वैसे चलाता है। चलने के निर्देश 1 यूहन्ना, पौलुसा के पत्रों और सुसमाचार की पुस्तकों जैसे नये नियम के दस्तावेज़ों में मिलते हैं, ये वही दस्तावेज़ हैं जो हमें स्वयं यीशु के बारे में बताते हैं।

कभी न खत्म होने वाला ज्ञान

यीशु ने प्रतिज्ञा की कि उसके साथ हमारा सम्बन्ध जीवन में हमारे अनुभव के साथ खत्म नहीं होता। इसके बजाय उसने कहा कि जब हमें उसे जान जाते हैं तो हम उसके हो जाते हैं। अन्त में वह वापस आ जाएगा और हमें अपने लोग बना लेगा, कि हम सदा तक स्वर्ग में उसके साथ रहें। उसकी जुदाई (मृत्यु) की बात सोचकर परेशानी में पड़े चेलों से यीशु ने कहा,

> तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगत तैयार करने आता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो (यूहन्ना 14:1-3)।

उनमें से एक थोमा द्वारा उसमें मार्ग का पता न होने की शिकायत करने पर जिस पर यीशु जा रहा था, उसने उत्तर दिया, ''मार्ग और सत्य और जीवन में मैं ही हूं'' (14:6)। हमें यीशु के साथ रहने के निर्देशों के जटिल सेट को सुलझाने की योग्यता नहीं, बल्कि केवल उसके पीछे चलने की आवश्यकता है।

नया नियम संकेत देता है कि केवल यीशु के बारे में जानना नहीं बल्कि यीशु को जानना संभव है। हम उसे जीवन, मृत्यु और जी उठने के संदेश के द्वारा जानते हैं। हम मन फिराव और आज्ञापालन के कामों में उस संदेश को मानने के द्वारा उसे जानते हैं, जो हमारे भीतर रहने लिए आता है, और हम उसकी शिक्षा के अनुसार, जैसे उसका जीवन था, जीवन बिताकर उसे जानते हैं। यदि हम उसे जानते हैं, तो हम उसके सथ स्वर्ग में सदा तक रह सकते हैं।

सावधानी की एक बात है: हम देख चुके हैं कि पहली सदी में जो लोग यीशु को जानते और उसे पीछे चलते थे, वे अपने अनुभव से नाटकीय ढंग से बदल गए थे। हमारे पास यह विश्वास

करने का हर कारण है कि हम भी बदल जाएंगे और वास्तव में हमें बदलने की आवश्यकता है और बदलना चाहिए भी। यीशु को जानना आपके जीवन को बदल देगा।

क्या आप उसे जानने को तैयार हैं ?